RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के ऋण अग्रिम एवं अमानतों का स्पियरमेन कोटि सहसंबंध के साथ तुलनात्मक विश्लेषण

*[1]शर्मा मनोज कुमार, [2]चौबे डॉ.चंन्द्रशेखर एवं [3]खनूजा डॉ.एस.एस

*[1]शोधार्थी (सहा. प्राध्यापक वाणिज्य),शासकीय सुखराम नागे महाविद्यालय, नगरी (छत्तीसगढ)
[2]निर्देशक (प्राचार्य) बी.सी.एस.शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धमतरी(छत्तीसगढ)
[3]सहनिर्देशक (प्राचार्य) दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 07 September 2018

संकेताक्षर Keywords
जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक , ऋण व अग्रिम, अमानत, ऋण जमा अनुपात

***Corresponding Author**
Email:sharmanagri[at]gmail.com

सारांश_ABSTRACT

सहकारिता का देश की आर्थिक प्रगति में अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। सहकारी बैंकिंग प्रणाली के त्रिस्तरीय ढॉचागत स्तर में जिला सहकारी बैंको की भूमिका राज्य सहकारी बैंक एवं जमीनी स्तर पर काम कर रही प्राथमिक सहकारी साख समितियों के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम कर रही मध्यस्थ के रूप में रही है जिसमें ग्रामीण कृषि एवं विकास के लिए सहकारिता के क्षेत्र में कार्य कर रही दोनों शीर्ष एवं ग्रामीण स्तर की संस्थाओं एवं इससे जुड़े कृषकों के विकास के क्रम को नई ऊचाइयॉ प्रदान की है।सहकारी बैकिग संरचना में जिला सहकारी केंन्द्रीय बैंक अपनी संगठनात्मक संरचना ग्राहक तथा ऋण संबंधी सेवा प्रदान करने में तथा शासकीय योजनाओं के कियान्वयन में अपनी भूमिका का निर्वहन करने में अपना विशिष्ट स्थान रखतें हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य स्पियरमेन कोटि सहसंबंध सांख्यिकीय तकनीकी के माध्यम से सहकारी ऋण एवं साख संरचना के ढॉचे में नवगठित छत्तीसगढ राज्य की प्रमुख सहकारी बैंको के रूप में अपना योगदान प्रदान कर रही जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. बिलासपुर के अमानतों एवं ऋण व अग्रिम का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए उनकी प्रवृत्ति की जॉच करना है।

भारत में सहकारी ऋण एवं साख संरचना के ढॉचे में सहकारी बैंको का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय रहा है। सहकारी बैंकिंग प्रणाली के त्रिस्तरीय ढॉचागत स्तर में जिला सहकारी बैंको की भूमिका राज्य सहकारी बैंक एवं जमीनी स्तर पर काम कर रही प्राथमिक सहकारी साख समितियों के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम कर रही मध्यस्थ के रूप में रही है जिसमें ग्रामीण कृषि एवं विकास के लिए सहकारिता के क्षेत्र में कार्य कर रही दोनों शीर्ष एवं ग्रामीण स्तर की संस्थाओं एवं इससे जुड़े कृषकों के विकास के क्रम को नई ऊचाइयॉ प्रदान की है। ग्रामीण जीवन से जुड़ी प्राथमिक सहकारी समितियों के कृषक सदस्यों के साख एवं ऋण की मांग का आंकलन करके जिला सहकारी बैंक राज्य एवं केन्द्र स्तर के प्राप्त वित्त की पूर्ति इन प्राथमिक सहकारी समितियों को प्रदान करते है ताकि इन समितियों एवं बैंक से जुड़े किसानों को कृषि संबंधी वित्त एवं धन की मांग आवश्यकताओं को पूरा किया जाकर उनके जीवनस्तर को ऊॅचा उठाया जा सके।

यह सत्य है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक सहकारी बैंकिंग ढांचे में मध्यस्तर की श्रृंखला है किन्तु इन बैंको की अपनी स्वायत्तता भी प्राप्त हैं एवं ये बैंके ऋण एवं अग्रिम प्रदान करने की गतिविधियों के साथ–साथ अन्य कृषित्तेर एवं बैंकिंग कार्यो में भी संलग्न रहती है। एवं भारतीय रिजर्व बैंक से प्राप्त लाइसेंस की सहायता से नाबार्ड के पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण के अधीन बैकिंग अधिनियम 1949 के प्रावधानों के अनुरूप अपनी बैकिंग संबंधी विभिन्न गतिविधियों को अंजाम देती है।

प्रस्तावना :– सहकारिता का देश की आर्थिक प्रगति में अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान है। कम साधनों के पारस्परिक सहयोग से अधिकतम उपयोग करना सहकारिता के द्वारा ही संभव हो सकता है। भारत में सहकारिता आंदोलन का विधिवत् विकास वर्ष 1904 के सहकारिता अधिनियम के द्वारा हुआ माना जाता है। एवं सहकारी बैंको का इतिहास 100 वर्षों से भी अधिक पुराना है।

भारत में सहकारी बैंकिंग संगठन का स्वरूप त्रिस्तरीय है। प्राथमिक एवं आधार स्तर पर प्राथमिक साख सहकारी समितियॉ है जो एक अथवा कुछ गांवों में सीधे कृषकों अथवा शहरी क्षेत्र में एक क्षेत्र व्यवसाय एवं समुदाय विशेष के लोगों का संगठन है इस संगठनात्मक स्वरूप में शीर्ष स्तर पर ऊपर की कड़ी के रूप में राज्य का सहकारी बैंक होता है जिसे राज्य सहकारी बैंक के नाम से जाना जाता है जो एक राज्य में एक ही होती हे हॉ उसकी शाखाऐं राज्य में कार्य कर सकती है तथा यह सहकारी बैंक उस राज्य के सभी जिला सहकारी केन्द्रीय से सीधा प्रत्यक्ष संबंध रखती है एवं इन जिला सहकारी केन्दीय बैंको की सहायता से आधार स्तर पर प्राथमिक सहकारी साख समितियॉ की समस्या को हल करती है।

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक व्दितीय स्तर अर्थात मध्य की इकाई है। जो एक ओर तो अपने क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाली समस्त प्राथमिक सहकारी साख समितियों से तो वही दूसरी ओर राज्य के शीर्षस्थ सहकारी बैंक (अपेक्स) से संबंध एवं समन्वय बनाए रखती है।

वास्तव में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक एक जिले के क्षेत्राधिकार में आने वाली समस्त प्राथमिक साख सहकारी समितियों एवं उसके सदस्यों का संगठन है तथा अपने अंशधारी सदस्यों एवं समितियों पर नियंत्रण रखना तथा उनकी वित्तीय तथा अन्य साख (ऋण) एवं अमानतों को सुरक्षित रखने संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करना इसका कार्य है।

सहकारी बैंकिंग संगठनात्मक व्यवस्था के सबसे अंतिम एवं आधार स्तर पर ग्रामीण कृषि प्राथमिक साख सहकारी समितियॉ आती है जो एक अथवा कुछ गांवों को मिलाकर ग्रामीण कृषि एवं कृषित्तेर कार्यो से जुड़े कृषकों एवं श्रमिको का संगठन है इस प्रकार राज्यों में सहकारी बैंकिंग संगठन का ढांचा संघात्मक प्रकृति का है।

चित्र:भारत में कृषि सहकारी साख एवं बैंकिंग संगठन का ढॉचा

इस प्रकार हम यह कह सकते है कि भारत में सहकारिता के क्षेत्र में सहकारी बैंकिंग प्रणाली रूपी भवन की नीव एवं आधार जहां ग्रामीण प्राथमिक कृषि साख सहकारी समिति है वहॉ दीवारे व स्तंभ जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकें है एवं भवन की छत उस राज्य की शीर्षस्थ राज्य सहकारी बैंक है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर (एक पृष्ठभूमि) : सहकारिता के क्षेत्र में नवगठित छ.ग.राज्य की राजधानी रायपुर का एक विशिष्ट स्थान है। राज्य का सबसे बड़ा जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले 04 जिलों में कार्यरत 61 शाखाओं एवं 340 प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों के साथ प्रदेश का अग्रणी बैंक है। जो विगत 104 वर्षों से कृषकों की सेवा में समर्पित हैं। इसकी स्थापना 1913 में हुई थी।

छ.ग. राज्य की न्यायधानी कहलायी जाने वाली बिलासपुर शहर में स्थित जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर की स्थापना 9 अप्रैल 1915 को हुई थी। राज्य का यह दूसरा सबसे बड़ा जिला सहकारी बैंक जो कि अपनी 51 शाखाऐं एवं 440 सहकारी समितियों के माध्यम से बिलासपुर जिले के कृषि आधारित कार्यो के लिए किसानों को 0% वार्षिक ब्याज पर ऋण एवं अग्रिम की सुविधा प्रदान कर रहा है। तथा जन सामान्य की बचत भावना को प्रोत्साहित करने हेतु बैंक खातों के माध्यम से अमानतों को स्वीकार करने के कार्य में संलग्न है।

साहित्यावलोकन (Review of Literature)

मुत्थु कुमार सेन एम. (2016) ने अपने शोधपत्र में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रामनाथपुरम (तमिलनाडु) के कार्यकुशलता एवं वृध्दि के अध्ययन के संदर्भ में उल्लेखित किया कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंको को अपनी कार्यप्रणाली में नवाचार को अमल में लाते हुए बैंकिंग के नवीन प्रमापों को प्रयोग में लाया जाना होगा एवं राष्ट्रीयकृत बैंको के समकक्ष नवीन आयाम स्थापित करने होंगे।[1]

उर्स एवं चिदंबरम (2000) ने केरल राज्य के 14 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंको के उपलब्धियों का अध्ययन किया एवं उन्होनें कार्यकुशलता मापन के 23 मानकों के प्रयोग के उपरांत पाया कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंको की परिचालन क्षमता में कमी का मुख्य कारण पूंजी की अपर्याप्तता एवं कमी एवं कोषो का समुचित नियोजन ना होना रहा है। इसके साथ ही अमानतों में कमी भी एक कारण है।

विजय एस.हुड्डा (2011) ने अपने शोधपत्र जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रोहतक एवं झज्जर के अमानतों एवं ऋण व अग्रिम का तुलनात्मक विश्लेषण में स्पियरमेन श्रेणी सहसंबंध रीति का अनुप्रयोग करते हुए उल्लेखित किया कि बैंको की अमानतों का ऋण व अग्रिम के साथ उच्च सहसंबंध है। इसके साथ ही यह भी पाया कि जहॉ झज्जर जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अमानतों के संग्रहण एवं साख अग्रिम में वृद्धि की प्रवृत्ति दर्ज की गई वहीं रोहतक जिला सहकारी केन्द्रीय बैंको के अमानत एवं ऋण अग्रिम में उतार चढ़ाव की प्रवृत्ति पायी गई जो कि बैंक के लिए चिंता का विषय है।[2]

गौतमन डॉ.सी. (2014) ने अपने शोधपत्र अध्ययन नागरिक सहकारी बैंको के अमानतों एवं अग्रिम का स्पियरमेन कोटि के सहसंबंध के साथ तुलनात्मक विश्लेषण अध्ययन में पाया कि अध्ययन अवधि में दोनों न्यादर्श बैंको के अमानतों एवं अग्रिम में उच्च स्तर का धनात्मक सहसंबंध है एवं अध्ययन अवधि में ली गई तीनों शून्य परिकल्पनाऐं अस्वीकृत मानी गई।[3]

अध्ययन का उद्देश्य :– प्रस्तुत शोधपत्र का एकांकी उद्देश्य स्पियरमेन कोटि सहसंबंध सांख्यिकीय तकनीकी के माध्यम से जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. बिलासपुर के अमानतों एवं ऋण व अग्रिम का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए उनकी प्रवृत्ति की जॉच करना है।

शोध प्रविधि :– शोध पत्र के अध्ययन हेतु छ.ग.में सहकारिता के क्षेत्र में कार्य कर रहे राज्य के दो बड़े सहकारी बैंक के प्रधान कार्यालय रायपुर एवं बिलासपुर को अध्ययन के लिए चुना गया है। अध्ययन पूर्णतः इन बैंको के अमानतों एवं ऋण व अग्रिम के तुलनात्मक विश्लेषण पर केन्द्रित है।

अध्ययन के निष्कर्षों तक पहुंचने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों एवं विधियों के अनुप्रयोगों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है जिसके अंतर्गत माध्य (औसत), प्रमाप विचलन, विचरण गुणांक के साथ ही तुलनात्मक विश्लेषण करने के लिए सहसंबंध विश्लेषण की स्पियरमेन कोटि अंतर विधि का प्रयोग करते हुए अंतिम लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास किया गया है। शोध के निष्कर्ष सामान्य निष्कर्ष के रूप में मान्य है।

अध्ययन की सीमाऐं व अवधि :– प्रस्तुत शोधपत्र में उद्देश्यों एवं लक्ष्य की पूर्ति हेतु जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैक बिलासपुर के अंतिम अंकेक्षित वित्तीय पत्रकों के विभिन्न मदों में से केवल बैंको के दो महत्वपूर्ण चर अमानत एवं ऋण व अग्रिम को इन बैंको के तुलनात्मक विश्लेषण हेतु न्यादर्श के रूप चुना गया है। इससे इन बैंको के वास्तविक निस्पादन क्षमता का आंकलन करने में सहजता होगी ।

अध्ययन हेतु इन बैंको के 2009–10 से वर्ष 2015–16 के विगत 7 वर्षो के आंकड़ों को अध्ययन हेतु समाविष्ट किया गया है। अर्थात शोधपत्र के अध्ययन की अवधि 2009–10 से वर्ष 2015–16 वर्ष के लिए सीमित रहेगी।

दो चरों के बीच होने वाले परिवर्तन के माप एवं सहसबंध की गणना हेतु ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक कार्ल डे. पियर्सन ने कोटि सहसंबंध विधि का सूत्रपात एवं विकास किया था जिसकी माप थी:–

$$[\ r_p = 1 - \frac{6\sum d^2}{N^3 - N}\ ]$$

परिकल्पनाऐं :– परिकल्पनाऐं शोध में शोधार्थी के अध्ययन की दिशा को एक नई ऊंचाई एवं आयामों की ओर ले जाती है एवं उनकी स्थापना पर बल देती है।

प्रस्तुत शोध पत्र अध्ययन हेतु निम्नलिखित तीन शून्य परिकल्पनाऐं (Null Hypotheis) मानी गई है जो इस प्रकार है–

H_1 -यह माना गया कि अध्ययन अवधि के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित बिलासपुर के अमानतों की प्रवृत्ति दिशाओं के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

H_2 -यह माना गया कि अध्ययन अवधि के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित बिलासपुर के ऋण व अग्रिम के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

H_3 -यह माना गया कि अध्ययन अवधि के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित बिलासपुर के ऋणजमा अनुपात (C.D. Ratio) के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

(तालिका क्रं. 01)
जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. रायपुर एवं बिलासपुर के अमानत एवं ऋण व अग्रिम का विवरण पत्र
(रू. लाखों मे)

क्रं.	वर्ष	जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर		जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर	
		अमानत	ऋण व अग्रिम	अमानत	ऋण अग्रिम
1	2009–10	108270	29597	42415	13313
2	2010–11	119837	33330	48116	14708
3	2011–12	132459	35073	56443	26198
4	2012–13	155160	36578	61361	34484
5	2013–14	169610	38074	82355	49980
6	2014–15	169887	41282	85136	44913
7	2015–16	168237	41710	90266	48753
	माध्य/औसत	**146208.57**	**36520.57**	**66584.57**	**33192.71**
	प्रमाप विचलन	**25811.88**	**4324.91**	**19187.95**	**15539.09**
	विचरण गुणांक	**17.65**	**11.84**	**28.82**	**46.81**

(स्त्रोतःजिला सहकारी केंन्द्रिय बैंक मर्या.रायपुर एवं बिलासपुर के अंकेक्षित वार्षिक वित्तीय विवरण प्रतिवेदन से साभार)

तालिका क्रं. 01 में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर दोनों प्रधान कार्यालय की अध्ययन अवधि के दौरान अमानतों एवं ऋण व अग्रिम की तुलनात्मक स्थिति को प्रदर्शित किया गया है तालिका से स्पष्ट होता है कि दोनों ही बैंको के अमानतों में लगातार प्रतिवर्ष वृध्दि दर्ज की गयी है जहॉ वर्ष 2009–10 में रायपुर बैंक की कुल अमानतें 108270.00 लाख रू. दर्ज की गयी थी वहीं यह वर्ष 2015–16 में बढकर 168237.00 लाख रू. दर्ज की गई । इन 7 वर्षों में अमानतों में 55% की वृध्दि

[1] मुत्थु कुमार सेन एम. (2016) '' जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रामनाथपुरम की वृध्दि एवं निष्पादन पर एक अध्ययन'' शैनलॉक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साईंस एंड न्यूमनेटिस।
[2] Vijay Hooda S. (2011)" Deposit And Advances of Districs Central Corporative Banks: A Comparative Analysis with Spearmans Rank Correcletion" SMART Jaurnal of Bussines Management Studies. 12-19
[3] Dr. C Gowthaman (2014) Reserch Paper title "Advance Bank Deposit of Urban Co.Operative Bank –A Comparative Analysis With Spearman's Rank Co. relation" Publish by Indian Co.Operative Review Jaurnal January (2014) Page 180-187

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

दर्ज की गई वहीं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर में वर्ष 2009–10 में 42415.00 लाख रू. अमानते थी वहीं यह 2015–16 में बढ़कर 90266.00 लाख रू. दर्ज की गयी अर्थात 7 वर्षों में बैंक की अमानतों में आश्चर्यजनक रूप से 113% की वृध्दि दर्ज की गइ जो अमानतों में बेहतर वृध्दि को प्रदर्शित करता हैं। स्पष्ट है बिलासपुर जिले की अमानतों में रायपुर बैंक की तुलना में दुगुनी दर से वृध्दि हुई है जहॉ जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर का औसत 146208.57 लाख रू. था वहीं बिलासपुर की अमानतों का औसत 66584.57 लाख रू. था इस प्रकार दोनों बैंको के अमानतों के विचरण गुणांक पर विचार करें तो पाएंगे कि भले ही बिलासपुर जिला सहकारी बैंक की अमानतों में वृध्दि का प्रतिशत अधिक है किंतु जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर की अमानतों में वृध्दि स्तर में अधिक स्थिरता (Consistancy) है।

अग्रिम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि दोनों ही जिला सहकारी केन्द्रीय बैंको ने अपने अमानतों के विरूध्द ऋण व अग्रिम के वितरण में भी प्रतिवर्ष क्रमिक वृध्दि दर्ज की है जहॉ वर्ष 2009–10 में रायपुर सहकारी बैंक के ऋण व अग्रिम की स्थिति 29597.00 लाख रू. थी वहीं 2015–16 में 41% वृध्दि दर्ज की जाकर यह 41710.00 लाख रू. का ऋण व अग्रिम वितरण किया। इसी प्रकार जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलापुर ने वर्ष 2009–10 में 13313.00 लाख रू. का ऋण व अग्रिम वितरण किया था उसने भी आश्चर्यजनक रूप में 266% वृध्दि के साथ 48753.00 लाख रू. का ऋण व अग्रिम वितरण करने में सफलता पायी। लेकिन सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु आंकड़ों के निर्वचन में ऋण व अग्रिम वितरण की स्थायित्व व संगतता के विश्लेषण में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर की स्थिति ठीक मानी जा सकती है हॉ हम यह जरूर कह सकते है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर के अमानतों व ऋण/अग्रिम में विचरण अधिक है।

(तालिका क्रं 02)
स्पियरमेन कोटि अंतर रीति अंतर्गत जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के अमानतों की विश्लेषण तालिका

क्रं.	वर्ष	अमानत (रायपुर)	रैंक (R_1)	अमानत (बिलासपुर)	रैंक (R_2)	$d(R_1-R_2)$	d^2
1	2009–10	108270	7	42415	7	0	0
2	2010–11	119837	6	48116	6	0	0
3	2011–12	132459	5	56443	5	0	0
4	2012–13	155160	4	61361	4	0	0
5	2013–14	169610	2	82355	3	−1	1
6	2014–15	169887	1	85136	2	−1	1
7	2015–16	168237	3	90266	1	+2	4
		N=7		N=7		$\sum d=0$	$\sum d^2=6$

$$r_e = 1 - \frac{6\sum d^2}{N^3-N}$$
$$= 1 - \frac{6\times6}{7^3-7}$$
$$= 1 - \frac{36}{336}$$
$$= 1 - 0.107 \qquad r_e = +0.893$$

उपरोक्त तालिका क्रं. 02 के अवलोकन से प्रतीत होता है कि बिलासपुर जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अमानतों की तुलना में रायपुर जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की अमानतों की राशि में अंतर दुगने से भी अधिक है इसका महत्वपूर्ण कारण दोनों जिलों के भौगोलिक परिस्थितियॉ, जनांकिकी एवं कार्यक्षेत्र की अधिकता है। स्वाभाविक है कि दोनों जिलों के क्षेत्राधिकार में आने वाली समिति एवं सदस्यों की संख्या अमानतों की राशि को प्रभावित करती है। चुंकि सहसंबंध रीति में हमारे व्दारा दोनों बैंको के अमानतों के वृध्दि एवं कमी की प्रवृत्तियों के मध्य सहसंबंध तकनीक के माध्यम से विश्लेषण का प्रयास किया गया है। विश्लेषण एवं गणना उपरांत स्पष्ट होता है कि दोनों बैंको के अमानतों के मध्य पर्याप्त उच्च क्षमता का धनात्मक सहसंबंध प्राप्त होता है जिसका मान (+0.893) है। अतः हमारी प्रथम शून्य परिकल्पना कि अध्ययन अवधि के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर के अमानतों के प्रवृत्ति दिशाओं के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, असत्य सिध्द हुई है एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट है कि दोनों बैंको के अमानतों की प्रवृत्तियों के मध्य पर्याप्त सार्थक सहसंबंध है। अर्थात दोनों बैंको की अमानतों में वृध्दि वर्ष 2009–10 से 2015–16 के मध्य समानान्तर रूप से दर्ज की गई है।

आंकड़ो के सांख्यकीय विश्लेषण की दृष्टि से सहसंबंध तकनीक का बहुत महत्व है। सहसंबंध एक ऐसी विवरणात्मक सांख्यिकीय माप है जो दो चरों के मध्य पाए जाने वाले संबंधो की मात्रा का विवरण देता है। सहसंबंध तकनीक एक सांख्यकीय तकनीक है जो यह मानती एवं विश्लेषण करती है कि दो चर एवं तथ्य एक दूसरे के संबंध में किस सीमा तक परिवर्तित होते है। सहसंबंध दो चरों के मध्य अर्न्तनिर्भरता को इंगित करता है। मुख्य रूप से यह दो चरों के मध्य संबंधों की माप हैं।[4]

(तलिका क्र 03)
स्पियरमेन कोटि अंतर रीति के अंतर्गत जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के ऋण व अग्रिम की स्थिति को दर्शाती विश्लेषण सारिणी

क्रं.	वर्ष	ऋण व अग्रिम (रायपुर)	कोटि (R_1)	ऋण व अग्रिम (बिलासपुर)	कोटि (R_2)	$d(R_1-R_2)$	d^2
1	2009–10	29597	7	13313	7	0	0
2	2010–11	33330	6	14708	6	0	0
3	2011–12	35073	5	26198	5	0	0
4	2012–13	36578	4	34484	4	0	0
5	2013–14	38074	3	49980	1	+2	4
6	2014–15	41282	2	44913	3	−1	1
7	2015–16	41710	1	48753	2	−1	1
		N=7		N=7		$\sum d=0$	$\sum d^2=6$

जहॉ $\sum d=0$ N=7 $\sum d^2=6$

$$r_e = 1 - \frac{6\sum d^2}{N^3-N}$$
$$= 1 - \frac{6\times6}{7^3-7}$$
$$= 1 - \frac{36}{336} \qquad = 1 - 0.107 \qquad r_e = +0.893$$

उपर्युक्त तालिका क्रं 03 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के सदस्य समितियों एवं वैयक्तिक सदस्यों को प्रदान किए गये ऋण व अग्रिम की स्थिति को प्रगट करती हैं। चुंकि सहकारिता के सिध्दांतो के अनुरूप इन बैंको की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य ही सहकारिता की परिधि में आने वाले अपने सदस्यों व समितियों के आश्रित कृषकों एवं उद्यमियों के लिए वित्त एवं अग्रिम की व्यवस्था करना है और यह बैंक केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय शीर्षस्थ इकाईयों से प्राप्त विभिन्न योजनान्तर्गत मदों की राशियों को प्राप्त कर उन्हें अपनी सदस्य समितियों को उपलब्ध करवाती है।

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के ऋण व अग्रिम के स्पियरमेन कोटि सहसंबंध रीति से सहसंबंध के विश्लेषण से स्पष्ट है कि दोनों बैको के ऋण व अग्रिम की प्रवृति अध्ययन अवधि में सतत् रूप से वृध्दि को दर्शाता है। तात्पर्य यह है कि इन बैंको ने अपने वित्तीय संसाधनों के प्रबंध एवं युक्तियुक्तकरण में ऋण एवं अग्रिम की आवश्यकता को पूरा किया है और प्राप्त परिणाम दोनों केन्द्रीय बैंको के ऋण व अग्रिम के मध्य पर्याप्त उच्च परिमाणीय सहसंबंध को प्रदर्शित करते है जिसका मान (+0.893) है । अतः हमारी व्दितीय परिकल्पना कि अध्ययन अवधि के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. रायपुर एवं बिलासपुर के ऋण व अग्रिम की प्रवृत्तियों के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है असत्य साबित होती है एवं दोनों बैंक के ऋण व अग्रिम में सतत् और समानांतर वृध्दि आपसी सहसंबंध को प्रमाणित करती है।

(तालिका क्र. 04)
स्पियरमेन कोटि अंतर रीति के अंतर्गत जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के ऋण जमा अनुपात की स्थिति को दर्शाती विश्लेषण सारिणी

क्रं.	वर्ष	ऋण जमा अनुपात (रायपुर)	कोटि (R_1)	ऋण जमा अनुपात (बिलासपुर)	कोटि (R_2)	$d(R_1-R_2)$	d^2
1	2009–10	27.34	2	31.39	6	−4	16
2	2010–11	27.92	1	30.57	7	−6	36
3	2011–12	26.48	3	46.42	5	−2	04
4	2012–13	23.57	6	56.20	2	+4	16
5	2013–14	22.45	7	60.69	1	+6	36
6	2014–15	24.30	5	52.75	4	+1	1
7	2015–16	24.79	4	54.00	3	+1	1
		N=7		N=7		$\sum d=0$	$\sum d^2=110$

$$r_e = 1 - \frac{6\sum d^2}{N^3-N}$$
$$= 1 - \frac{6\times110}{7^3-7}$$
$$= 1 - \frac{660}{336}$$
$$= 1 - (1.964)$$
$$r_e = -0.964$$

[4] गुप्ता '' श्री बी.एल. एवं एम.सी.गुप्ता (2015)''व्यावसायिक सांख्यिकी '' एस. बी.पी.डी. पब्लिसिंग हाऊस आगरा (पृ.402)

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

तालिका क्रं. 04 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के अमानतों के विरूध्द ऋण व अग्रिम की स्थिति को प्रदर्शित करता है जिसे ऋण जमा अनुपात (Credit deposit Ratio) के नाम से जाना जाता है। बैंको का ऋण जमा अनुपात सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है जो बैंक के वित्त व आय के अनुकुल विकासकारी योजनाओं के अनुरूप लोगों को उपलब्ध कराए जा रहे साख की दर को प्रदर्शित करता है।

बैंकिंग अधिनियम एवं विनिमयन 1949 के जारी मानकों के अनुरूप प्रत्येक राष्ट्रीयकृत एवं सहकारी बैंको का ऋण जमा अनुपात 60% से ऊपर होना चाहिए परंतु अध्ययन मे यह बात उभरकर सामने आयी कि अधिकांश बैंको ने ऋण व अग्रिम में संभावित जोखिम व गैर निष्पादनीय से बचने हेतु अपनी अमानतों के विरूध्द पर्याप्त ऋण व अग्रिम के वितरण से बचती है जिससे कि उनका ऋण जमा अनुपात 60% के मानक से कम प्रदर्शित होता है। यदि उपरोक्त तालिका क्रं 04 के अवलोकन से स्पष्ट है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर का ऋण जमा अनुपात 40% से अधिक है यदि वर्ष 2009–10 व 2010–11 को छोड़ दिया जावे तो निरंतर प्रगति पर है।

स्पियरमैन कोटि अंतर विधि के अंतर्गत ऋण जमा अनुपात रायपुर एवं बिलासपुर जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के ऋण जमा अनुपात के मध्य सहसंबंध का विश्लेषण (–0.96) प्रदर्शित होता है स्पष्ट है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित बिलासपुर के ऋण जमा अनुपात के मध्य ऋणात्मक उच्च ऋणात्मक परिमाणीय सहसंबंध प्रगट होता है। अतः हमारी तृतीय शून्य परिकल्पना की अध्ययन अवधि के दौरान जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर के ऋण जमा अनुपात के मध्य कोई सार्थक सह संबंध नहीं है बिल्कुल सत्य साबित होता है।

अध्ययन के परिणाम :– उपरोक्त शोधपत्र के अध्ययन का एकांकी उद्देश्य सांख्यिकीय विश्लेषण की स्पियरमेन कोटि अंतर विधि के सहायता से जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के अमानतो, ऋण व अग्रिम तथा ऋण जमा अनुपता (C.D.Ratio) का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए उनके मध्य सहसंबंध परिमापों का विश्लेषण करना उक्त अध्ययन अवधि के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिन तीन शून्य परिकल्पनाओं को आधार बनाकर हमने प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया उसके परिणामों से स्पष्ट है कि :–

1. जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के अमानतों की प्रवृत्तियों के मध्य सार्थक धनात्मक सहसंबंध हें अर्थात दोनों ही बैंको के अमानतों में प्रतिवर्ष समानांतर वृध्दि दर्शित होती हैं।
2. जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के सदस्यों को वितरित ऋण व अग्रिम के मध्य भी सार्थक धनात्मक सहसंबंध है अर्थात ऋण व अग्रिम के वितरण के दृष्टिकोण से दोनों ही बैंको की स्थिति संतोषप्रद है।
3. यदि ऋण जमा अनुपात के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों पर नजर डालें तो विदित होता है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर एवं बिलासपुर के ऋण जमा अनुपातों के मध्य ऋणात्मक प्रवृत्ति का सहसंबंध है अर्थात दोनों बैंको के ऋण जमा अनुपातों के मध्य कोई भी सार्थक सहसंबंध नहीं है।

अतः तीनों परिकल्पनाओं में प्रथम दो परिकल्पनाऐं तो अस्वीकार्य है परंतु तृतीय परिकल्पना सत्यता के निकट है।

निष्कर्ष :– अध्ययन के निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंको के वित्त प्रबंधन में अमानतों एवं ऋण व अग्रिम का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्ययन अवधि के दौरान दोनों केन्द्रीय बैंको के अमानतों के मध्य सहसंबंध विश्लेषण यद्यपि धनात्मक प्रवृत्ति के हैं किंतु आय के पर्याप्त संसाधनों के बावजूद बैंको की ऋण जमा अनुपात की प्रवृत्ति समीक्षा का विषय है। बैंको का प्राथमिक लक्ष्य अपनी सदस्य समितियों के आश्रित कृषकों एवं सदस्यों को उनकी कृषि संबंधी आवश्यकताओं के अुनरूप ऋण व अग्रिम उपलब्ध करवाना है परंतु व्यवहार में यह स्थिति मानक से कम है जो कि उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है। अतः बैंको को अपनी वित्तीय सदृढ़ता बनाए रखने के लिए अपने पूंजी संरचना के दो महत्वपूर्ण घटकों अमानतों एवं ऋण व अग्रिम के मध्य पर्याप्त संतुलन बनाए रखने पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना होगा।

संदर्भ (References)

1- मुत्थु कुमार सेन एम. (2016) '' जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रामनाथपुरम की वृध्दि एवं निष्पादन पर एक अध्ययन'' शैनलॉक्स इंटरनेशनलजर्नल ऑफ साईंस एंड न्यूमनेटिस।

2-Vijay Hooda S. (2011)" Deposit And Advances of Districs Central Corporative Banks: A Comparative Analysis with Spearmans Rank Correcletion" SMART Jaurnal of Bussines Management Studies. 12-19

3-Dr. C Gowthaman (2014) Reserch Paper title "Advance Bank Deposit of Urban Co.Operative Bank –AComparative Analysis With Spearman's Rank Co. relation" Publish by Indian Co.Operative Review Jaurnal January (2014) Page 180-187

4- गुप्ता '' श्री बी.एल. एवं एम.सी.गुप्ता (2015)''व्यावसायिक सांख्यिकी '' एस. बी.पी.डी. पब्लिसिंग हाऊस आगरा (पृ.402)

5- वार्षिक प्रतिवेदन जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक रायपुर (प्रधान कार्यालय) एवं जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक बिलासपुर (प्रधान कार्यालय) बिलासपुर वर्ष 2009–10 से 2015–16 तक ।

6-उपाध्याय डॉ.आर.बी एवं शर्मा ओ.पी. '' सहकारिता के सिद्धांत एवं व्यवहार '' प्रकाशक रमेश बुक डिपो जयपुर (1979–80)

7-https://jskbankraipur.in/

© RRIJM 2015, All Rights Reserved